संपादकीय

डॉक्टर टी महादेव राव और उनका रचना संसार

समय–समय पर गांधीश्वर के बहुत से यादगार अंक प्रकाशित हुए हैं। अपने अंकों के माध्यम से गांधीश्वर ने एक बड़े पाठक समुदाय को अपने से जोड़ा भी है । इस पत्रिका से मेरा तब का परिचय है जब गांधी के हिंद स्वराज पर इसका एक महत्वपूर्ण अंक प्रकाशित हुआ था और यह अंक मुझे लोकसदन और
गांधीश्वर के संपादक सुरेश रोहरा के माध्यम से प्राप्त हुआ था। इस घटना को घटित हुए एक अरसा हो गया । तब मुझे इस बात का एहसास नहीं था कि गांधीश्वर के किसी अंक का अतिथि संपादन भी मुझे करना पड़ सकता है। बतौर अतिथि संपादक पाठक समुदाय से आज मैं मुखातिब हूं तो निश्चय ही यह एक नई घटना है। अपने दैनिक जीवन में हम देखते हैं कि हमारे आसपास हर दिन कोई न कोई नई घटना घटित हो रही है। दुनिया में हर दिन जीवन के नए किस्से, नई कहानियाँ बन रही हैं। यह अलग बिषय है कि इन नए किस्से , नई कहानियों को अक्सर हम अपने तईं देख नहीं पाते, उनको परखने से हम चूक जाते हैं।

इन परिस्थितियों में इन किस्से कहानियों को दिखाने समझाने की जिम्मेदारी लेखक अपने ऊपर लेता है। वह उन घटनाओं पर कविताएं लिखता है, कहानियाँ लिखता है, व्यंग्य लिखता है, नाटक लिखता है। जीवन के समय का एक बड़ा हिस्सा लेखक इन रचनाओं को रचने में ही व्यतीत कर देता है। कथा सम्राट प्रेमचंद इसके बड़े उदाहरण हैं। देखा जाए तो लेखक द्वारा ली गई यह जिम्मेदारी एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है जिसके बदले लेखक समाज से कुछ नहीं मांगता। समाज को वैचारिक दिशा प्रदान करने में लेखक की बड़ी सहभागिता होती है। लेखक की यह सामाजिक सहभागिता भले अमूर्त होती है पर जब हम उसकी रचनाओं को पढ़ते हैं, तब लेखक की सामाजिक सहभागिता के महत्व को समझ पाते हैं। गांधीश्वर ने लेखकों की सामाजिक सहभागिता के महत्व को समय–समय पर समझा है, परखा है, जाना है और उसे सम्मान भी दिया है। इसी कड़ी में गांधीश्वर का यह अंक वरिष्ठ लेखक डॉ. टी महादेव राव के व्यक्तित्व और कृतित्व पर केंद्रित है।

डॉक्टर राव हिंदी साहित्य और दर्शनशास्त्र के विद्वान हैं। भारत सरकार के उपक्रम एचपीसीएल में लंबे समय तक वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) के पद पर कार्य करते हुए 2018 में वे सेवानिवृत्त हुए। उनके साथ एक महत्वपूर्ण बात यह जुड़ी है कि नौकरी करते हुए भी उन्होंने लेखन की सामाजिक जिम्मेदारी का भली भांति निर्वहन किया। गैर हिंदी भाषी राज्य से जुड़े होने के बावजूद हिंदी के प्रति उनका अगाध प्रेम यहां उल्लेखनीय है। सेवानिवृत्ति के उपरांत भी लेखन एवं विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से वे जिस गति से हिंदी भाषा की सेवा कर रहे हैं, हिंदी के प्रति उनके प्रेम को ही यह घटना दर्शाती है। सृजन नामक संस्था के माध्यम से विशाखापट्टनम में रहकर साहित्यिक गतिविधियों का वे निरंतर संचालन करते हैं। उन्होंने हिंदी भाषा में बहुत से व्यंग्य लिखे हैं, बहुत सी कविताएं लिखी हैं, उनके वैचारिक आलेख, उनके नाटक और उनकी लघु कथाएं पाठकों के बीच बहुत लोकप्रिय हुई हैं। तेलुगु और अंग्रेजी भाषा की बहुत सी रचनाओं का उन्होंने हिंदी अनुवाद भी किया है।

इस अंक में डॉक्टर राव के व्यक्तित्व पर बहुत से सहृदय पाठकों, लेखकों ने ईमानदारी पूर्वक लिखा है। उनके लिखे आलेखों से डॉ राव के सरल–सहज व्यक्तित्व को समझने में पाठकों को जरूर आसानी होगी। कई किताबों के रचयिता डॉ राव के साहित्यिक रचना कर्म पर केंद्रित आलेखों के माध्यम से बहुत से लेखकों ने अपना लेखकीय योगदान गांधीश्वर को दिया है। इन आलेखों के माध्यम से डॉक्टर राव के रचनाकर्म की बारीकियों को भी समझा जा सकता है। इस अंक में पाठकों के लिए डॉक्टर राव की कुछ व्यंग्य रचनाएं, कविताएं, लघुकथाएं एवं संस्मरण भी शामिल हैं। लेखक की वैचारिकी, उसकी सामाजिक प्रतिबद्धता को उसकी रचनाएं बेहतर ढंग से व्याख्यायित करती हैं। हमारे पाठकों को यह कहते हुए खुशी हो रही है कि शामिल रचनाओं को पढ़कर डॉक्टर राव की भीतरी दुनिया को भी बेहतर ढंग से जाँचा परखा जा सकता है।

बहरहाल गांधीश्वर का यह अंक आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे संतोष और विश्वास है कि इसे पाठकों का प्यार हमेशा की तरह मिलता रहेगा।

रमेश शर्मा
अतिथि संपादक

साक्षात्कार

जन जीवन और परिस्थितियां वर्तमान में व्यंग्य की मार झेल रहे हैं

डाक्टर टी महादेव राव तेलुगु ही नहीं हिंदी के भी महत्वपूर्ण लेखक है... आप कहानी और कविताएं,ही नहीं सामयिक लेख भी पत्र–पत्नी गांव में लिखते रहते हैं। आपकी कविताएं बहुत ही गंभीर और विविध प्रतीकों से भरी हमें सोचने को विवश करती हैं। आप नाट्य अभिनय के भी महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं।

डॉ टी महादेव राव से प्रोफेसर राम पंचभाई का साक्षात्कार

आज हम आंध्रप्रदेश जैसे हिंदीतर राज्य के प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार डॉ टी महादेव राव से बातचीत करते हैं उससे पहले मैं डॉ राव के बारे में थोड़ा परिचय देता चलूं। डॉ महादेव राव विशाखापटनम के रहने वाले हैं। इन्होंने हिंदी में एम ए पीएचडी किया है। दर्शन शास्त्र में एम ए के साथ साथ पी जी सर्टिफिकेट इन जर्नलिज्म भी किया है। हिंदी की लगभग हर विधा में कलम चलाने वाले डॉ राव सेवा निवृत्ति के बाद आज भी लेखन में उतने ही व्यस्त हैं जितने पहले थे। आइए उनसे बातचीत का सिलसिला शुरू करें

'राव साब। आपने साहित्य और पत्रकारिता में डिग्रियां हासिल कीं लेकिन राजभाषा सेवा में आप तीन दशकों तक जुड़े रहे। इस बारे में कुछ बताइए।

''मैने अपने करियर की शुरुआत कोरबा और रायपुर में स्वतंत्र पत्रकारिता से ही शुरू की। फिर एक दैनिक पत्र में उप संपादक बना। कुछ समय बाद परिस्थितियां ऐसी बनी कि पत्रकारिता और प्रेस छोड़कर मैं हिंदुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटेड (एच पी सी एल) विशाख रिफाइनरी में राजभाषा अधिकारी बना। तीस वर्षों की सेवा से बाद वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा के पद पर सेवा निवृत्त हुआ। हिंदी में मेरी अब तक आठ पुस्तकें प्रकाशित हुईं जिनमें मेरे काव्यसंग्रह विकल्प की तलाश में के लिए मुझे मानव संसाधन विभाग का हिंदी श्रेष्ठ कवि का एक लाख रुपयों का पुरस्कार प्राप्त हुआ। राजभाषा से जुड़ने के पीछे कुछ विवशताएं काम कर रही थीं।

आंध्र प्रदेश से बहुत ज्यादा प्रकाशित होने वाले रचनाकार हैं आप। कुछ दैनिकों में आपके कॉलम भी चलते हैं। आप व्यंग्य ज्यादा लिखते नजर आते हैं। कभी नहीं लगा की आपको शिक्षण क्षेत्र में यानी अकादमीशियन होना था जो कि आपके लिए समुचित क्षेत्र था।

बिल्कुल होना था, लेकिन जब मैं एसोसिएट प्रोफेसर के लिए चुना गया यहीं तब कुछ तकनीकी अड़चनें आईं। जैसे मेरा शेष कार्यकाल 15 वर्ष से कम था जिससे मैं कई सुविधाओं से वंचित हो सकता था। उस पर वेतन कंपनी की बहुत अधिक भी था। तो चाहकर भी में शिक्षण क्षेत्र में न जा सका। हां, विश्व विद्यालय के हिंदी विभाग में अतिथि संकाय के रूप में अनुवाद, हिंदी के विभिन्न रूप, राजभाषा विषयों पर एम ए के विद्यार्थियों को व्याख्यान दिया करता।

आपको व्यंग्य लिखने के लिए अच्छे और प्रभावी विषय क्या लगते हैं ?

''मुझे आज का माहौल समाज का, राजनीति और प्रौद्योगिकी के कारण शुष्क होते मानवीय संबंध विषय व्यंग्य लिखने के लिए उपयुक्त लगते हैं। वैसे देखा जाए जन जीवन और परिस्थितियां वर्तमान में व्यंग्य की मात झेल रहे हैं। लोग एक दूसरे से ताने मारने और व्यंग्य कसने के अंदाज में बातें करते हैं। जब हमारा सारा माहौल ही व्यंग्यमय हो गया है तो विषय ढूंढने की हमें जरूरत नहीं पड़ती। ऐसा माहौल पहले कभी नहीं रहा।

'आपकी व्यंग्य शैली अच्छी है सहज सी और स्पर्श करती सी। घर में, परिजनों के साथ क्या कभी व्यंग्य करते हैं?

''मैने इससे पहले एक साक्षात्कार में कहा था कि व्यंग्य मेरे रग रग में बसा है। घर में सदस्यों के साथ भी होता है व्यंग्य का व्यवहार। बेटे से कुछ काम कहूं अगर वह हुआ नहीं तो मैं पहले से उसे धन्यवाद देते हुए कहता हूं कि बहुत बढ़िया किया तुमने ये काम। समझिए अगले एक दो घंटे में काम हो जायेगा। खाने में नमक कम हो तो कहता हूं की अभी तक मुझे बी पी नहीं है, फिर ये एहतियात क्यों। नमक ज्यादा हो गया तो कहता हूं बीपी नहीं है का मतलब ज्यादा नमक खाकर उसे न्यौता नहीं देना है। ये सब चलता रहता है। सभी मेरी आदतों और बातों से अच्छी तरह वाकिफ हैं।

आप नाटक, लेख, कहानी और कविताएं भी लिखते हैं। 'आपकी कविताएं बहुत ही गंभीर किस्म की विविध प्रतीकों से भरी सोचने को विवश करती सी लगती हैं। आप क्या कहना चाहेंगे।

''हां मैं लगभग सारी विधाओं में कलम चलाता हूं। यह सब मेरे स्वतंत्र पत्रकारिता और प्रेस में काम के दौरान हुआ। विषय कोई सूझा तो फिर यह सोच जागती है कि इसे किस विधा में बेहतर लिख सकता हूं। उसी के हिसाब से विधा का चयन और रचना का सृजन करता हूं। रही बात कविताओं की तो स्वांतःसुखाय शुरू किया था कविता लेखन लगभग पैंतालीस साल पहले। बस वही आदत अब भी बनी हुई है। कविताएं ज्यादातर गंभीर और सामयिक प्रभाव के कारण लिखता हूं। लेकिन मेरा पहला शौक या समर्पण कहूं व्यंग्य ही है।

अनुवाद तेलुगु से हिंदी, अंग्रेजी से हिंदी भी आपने किया है। कविताओं, कहानियों और लेखों का काफी अनुवाद आपने किया। इसके बारे में बताएं।

''हिंदी और अंग्रेजी के अलावा मेरी मातृभाषा तेलुगु पर भी मेरी अच्छी पकड़ है। जब दूसरी भाषाओं की प्रभावी रचनाएं पढ़ता हूं और लगता है कि इन्हें हिंदी पाठकों तक पहुंचाया जाए तो मैं अनुवाद करता हूं। अब तक 85 अंग्रेजी से हिंदी और 45 तेलुगु से हिंदी में अनूदित कविताएं हैं जो प्रकाशित हुईं। 145 लेख और 5 कहानियां तेलुगु से हिंदी में अनूदित और प्रकाशित हैं। मुझे अनुवाद भी अच्छा लगता है। विशेषकर कविताओं का अनुवाद।

आपकी संस्था सृजन के बारे में बताएं जो पिछले 22 वर्षों से हिंदीतर क्षेत्र विशाखापटनम में हिंदी साहित्य का सक्रिय रूप से अलख जगा रही है।

''आपके प्रश्न में ही उत्तर है। एक सौ पचास के करीब कार्यक्रमों के माध्यम से सृजन ने हिंदी साहित्य का जो माहौल यहां बना रखा है उससे न केवल नए साहित्यकार, नव लेखक जुड़ रहे हैं बल्कि पुराने कवि और लेखकों को भी लिखने और पढ़ने की प्रेरणा मिलती है। रचनाकारों को प्रोत्साहन, मंच प्रदान करना और प्रेरित करना सृजन का मूल उद्देश्य है जिस पर पूरी सक्रियता के साथ संस्था कार्यरत है।

प्रोफेसर राम पंचभाई अंग्रेजी विभाग, आर्ट्स अँड कॉमर्स कॉलेज यवतमाल,महाराष्ट्र वक्ता,लेखक,कवि,समीक्षक (इंग्लिश,मराठी,हिंदी)